सांस्कृतिक महत्त्व :-

पुराण भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि हैं। इनमें भारत की सत्य और शाश्वत आत्मा निहित है। इनके अध्ययन के बिना भारत का यथार्थ चित्र सामने नहीं आ सकता और भारतीय जीवन का द ष्टिकोण स्पष्ट नहीं हो सकता। पुराणों के वर्ण्य विषय को देखने से ज्ञात होता है कि सर्ग-प्रतिसर्ग वंश मन्वन्तर व वंशानुचरित के साथ-साथ आख्यान, उपाख्यान, गाथा व कल्प शुद्धियों का संयोजन भी पुराण संहिता में था। इसके अतिरिक्त कई अन्य विषयों का भी पुराणों में समावेश किया गया है। यथा भुवन कोश (भूगोल) वर्णाश्रमधर्म संस्कार, व्रत, दान, तप, श्राद्ध, पूजा, राजधर्म, तीर्थ महात्म्य, आयुर्वेद आदि विद्यायें। पुराणों में इन सभी विषयों और शास्त्रों का संनिवेश लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर किया गया था। यद्यपि ये सभी वेदों के वर्णित विषय थे परनतु वे जनसाधारण के लिए उपयोगी सिद्ध न हो सके। अतः पुराणों ने इन सभी विषयों तथा शास्त्र निहित ज्ञान को जनसाधारण तक सरल भाषा में पहुंचाने का असाधारण कार्य किया और इसीलिए पुराणों को प चम वेद की संज्ञा से विभूषित किया गया।

समस्त ज्ञान का भण्डार होने के कारण ही पुराणों को भारत की सभ्यता संस्कृति और वैभव आदि का दर्पण कहा गया है। प्राचीन भारतीय समाज की आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक उन्नति का ज्ञान पुराणों के द्वारा ही प्राप्त होता है। पुराणों की महत्ता अन्तः साक्ष्य से भी प्रमाणित हैं। देवी भागवत पुराण में कहा गया है :-

'श्रुतिस्म त्युभे नेत्रे पुराणं हृदयं स्म तम्' अर्थात् श्रुति और स्म ति दो नेत्र हैं और पुराण हृदय है।

वस्तुतः पौराणिक साहित्य अगाध ज्ञान का भण्डार है जिसमें ज्ञान विज्ञान, लोक व्यवहार समाज एवं संस्कृति के सभी पक्षों का सांगोपाङ्ग विवेचन है। पुराण विद्या के विषय में उल्लेखनीय है कि याज्ञवल्क्य ने विद्याओं की गणना में पुराण विद्या को प्रथम स्थान दिया है।

> पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः।
> वेदाः स्थानानि विघानां धर्मस्य च चतुर्दश।।

पुराणों के सांस्कृतिक महत्व से तात्पर्य पुराण ग्रन्थों में वर्णित संस्कृति एवं सांस्कृतिक तत्वों से है जिसके अन्तर्गत तत्कालीन समाज वर्णाश्रम व्यवस्था राजधर्म, तीर्थ, व्रत, दान, श्राद्ध, भूगोल तथा विभिन्न विज्ञान जैसे आयुर्वेद, 'रत्नशास्त्र', वास्तुविद्या, ज्योतिष धनुर्विधा और सामुद्रिक शास्त्र आदि सम्मिलित है। अष्टादश महापुराणों में उपर्युक्त विषय अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णित है। पुराणों की सांस्कृतिक महत्ता प्रतिपादित करने हेतु कुछ विषयों का संक्षिप्त रूप से वर्णन प्रस्तुत है :-

१. विज्ञान

लोकोपयोगी अनेक विज्ञानों का वर्णन पुराणों में विशेषकर विश्वकोषीय पुराणों (अग्नि, गरुड, नारद) में प्रचुरता से उपलब्ध होता है। इनमें आयुर्वेद, वास्तुविद्या, रत्नविद्या धनुर्विद्या, ज्योतिष विद्या प्रमुख हैं।

(क) आयुर्वेद :- आयुर्वेद एक लोकोपयोगी जनजीवन से सम्बद्ध शास्त्र हैं। फलतः लोक से सम्बन्ध रखने वाले पुराणों में इसकी चर्चा नितान्त स्वाभाविक है। अग्नि पुराण ओर गरुड दोनों पुराणों में यह विषय व्यापक रूप से चर्चित है। आयुर्वेद के विभिन्न विभागों में निदान तथा चिकित्सा मुख्य है और इनके निमित्त औषधियों के स्वरूप तथा गुण का परिचय होना आवश्यक है। आयुर्वेद के अन्तर्गत पुराणों में विभिन्न रोगों के लक्षण देते हुए उनकी औषधियों का वर्णन किया है। इसके साथ-साथ विभिन्न सिद्ध योगों जैसे आयु व द्धि योग, बुद्धिव द्धि योग एवं बल व द्धि योगों का वर्णन है।

इन पुराणों में आयुर्वेद के अन्तर्गत केवल मानव मात्र के लिए उपयोगी चिकित्सा पद्धति का ही वर्णन नहीं अपितु गो, अश्व, गज एवं व क्षों से सम्बन्धित आयुर्वेद भी वर्णित हैं।

(ख) वास्तुविद्या :- मन्दिर और राजप्रसाद के निर्माण विधि को वास्तु शास्त्र के नाम से पुकारते हैं। यह बहुत ही उपयोगी विद्या है। सामान्य ग हस्थ के लिए यद्यपि कम परन्तु राजाओं के लिए अत्यधिक उपयोगी है। मत्स्य पुराण अग्नि पुराण, विष्णु धर्मोतर पुराण, गरुड पुराण में यह विषय उपलब्ध होता है। वास्तु विद्या के अन्तर्गत चार प्रकार के विषय पुराणों में विवेचित हैं:-

(१) वास्तु विद्या के मूल सिद्धान्त

(२) स्थान का चुनाव ओर उस पर निर्माण की रूपरेखा

(३) देव प्रतिमाओं का निर्माण

(४) मन्दिर तथा राजप्रसादों की रचना।

इसके अतिरिक्त ग ह निर्माण तथा नगर निर्माण से सम्बन्धित वास्तु भी पुराणों में विवेचित है।

(ग) रत्न विद्या :- राज्य व्यवस्था के निमित्त शासन के संचालन में अर्थ की विशेष महत्ता होती है जिसके अन्तर्गत रत्नों का बहुमूल्य योगदान रहता है जिसके अन्तर्गत रत्नों की परीक्षा विशेष रूप से मुख्य है। रत्न परीक्षा का विषय भी कुछ पुराणों में निर्दिष्ट है। जैसे गरुड पुराण में यह विषय बारह अध्यायों में अत्यन्त विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है। रत्न परीक्षा के अन्तर्गत सर्वप्रथम रत्नों का विभाजन कर उनके गुण दोषों का वर्णन मिलता है तथा साथ ही विभिन्न रत्नों के नाम भी उल्लिखित हैं। इनमें विभिन्न प्रकार के रत्नों की विभिन्न स्थानों पर पाई जाने वाली खानों का भी वर्णन मिलता है।

(घ) धनुर्विद्या :-प्राचीन काल में यह विद्या अत्यन्त प्रख्यात थी परन्तु देश के परतन्त्र हो जाने के कारण इस विद्या से सम्बद्ध ग्रन्थों के नाम ही यत्र तत्र उपलब्ध होते हैं जबकि पुराणों में यह विद्या विशेष रूप से विवेचित है। अग्नि पुराण के चार अध्यायों में इसकी विद्या का सार संकलित किया गया है।

(ङ) ज्योतिष विद्या :- ज्योतिष विद्या का विवरण भी पुराणों में यत्रतत्र उपलब्ध होता है। इनमें गणित और फलित दोनों प्रकार के ज्योतिष का वर्णन मिलता है। मुख्य रूप से श्रीमद्भागवत, देवी भागवत, गरुड़ पुराण, नारद पुराण तथा अग्नि पुराण में यह विषय विवेचित है। इसके अन्तर्गत नक्षत्रों का वर्णन, काल निर्णय, राशियों का वर्णन, यात्रा में शुभ-अशुभ का कथन, विभिन्न दोषों तथा विभिन्न लक्षणों में विवाह के फल आदि विषयों का विवरण या विवेचन मिलता है।

२. धर्म

वैदिक समाज में इष्टापूर्त्त धर्म की महिमा विशिष्ट रूप से मान्य तथा ग्राह्य है।

इष्टा पूर्त शब्द का प्रयोग ऋग्वेद के एक मन्त्र में उपलब्ध होता है। परन्तु इसकी व्याख्या या अर्थ का संकेत वहाँ नहीं मिलता। पुराणों में इन शब्दों की व्याख्या मिलती है। जिसमें इष्ट वेद द्वारा प्रतिपाद्य कर्म है तथा पूर्त पुराणों द्वारा प्रंशसित कर्म है। तात्पर्य यह है किं जनता के कल्याण के लिए वापी, कूप, तालाब आदि का खुदवाना, मन्दिर निर्माण करना और याचकों को अन्न प्रदान करना पूर्त धर्म कहलाता है और इसी धर्म का अनुष्ठान पुराणों के द्वारा बहुशः प्रशंसित है।

पुराणों में ऐसे बहुत से विचार हैं कि जो बिल्कुल आधुनिक प्रतीत होते हैं जैसे समाज की सेवा और पीड़ितों के दुःख का अपनयन सर्वश्रेष्ठ धर्म के रूप में परिगणत किया गया है।

न स्वर्गे ब्रह्मलोके वा तत् सुखं प्राप्यते नरैः।
यदार्तजन्तुनिर्वाणै दानोत्थमिति मे मतिः।।

अवतारवाद पुराणों का महनीय दार्शनिक सिद्धान्त है। इसके साथ ही भक्ति का सिद्धान्त भी पुराणों में विशद रूप से प्रतिपादित है। इसी से सम्बद्ध व्रतों का भी पुराणों में बड़ा विस्तार है। व्रतों के अन्तर्गत तिथि व्रत, मास व्रत और नक्षत्र व्रत आदि सम्मिलित हैं। दान का भी पुराणों में विशद वर्णन मिलता है। बल्लाल सेन ने अपने दान सागर नामक ग्रन्थ में दान का विस्त त और प्रमाणिक विवेचन प्रस्तुत किया है। जिसमें पुराणों के आवश्यक श्लोक उद्ध त किये गये हैं। षोडष महादानों का विशिष्ट वर्णन भी अनेक पुराणों में उपलब्ध होता है।

श्राद्ध का विषय भी बड़ा उपादेय माना जाता है। तीर्थों में किये जाने वाले श्राद्ध का विशिष्ट महात्म्य पुराणों में वर्णित है। श्राद्ध के विषय में सर्वमान्य होने से गया तीर्थ की महिमा प्राचीन काल से ही प्रचलित है।

पुराणों में तीर्थों की महिमा का विपुल वर्णन मिलता है। इसी स्थान पर किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा की गई तपश्चर्या से परिपूर्ण स्थल विशेष की संज्ञा तीर्थ है। तीर्थ का मूल अर्थ है वह स्थान जहां पर किसी नदी को पार किया जा सकता है। ऐसे स्थानों पर जनता का एकत्र होना स्वाभाविक है। धीरे-धीरे नदी तट होने से पवित्रता की दिव्य भावना से मण्डित होने पर वही स्थान धार्मिक तात्पर्य वाले तीर्थ के रूप में परिग्रहीत हो जाता है। यद्यपि तीर्थ मूलतः नदी से सम्बद्ध है। तथापि पवित्रता, शान्ति आदि के साधर्म्य से अन्य भी स्थल जो पर्वतों के ऊपर भी विद्यमान हैं। तीर्थ की संज्ञा पाने लगते हैं। तीर्थ भारतवासियों को एकता के सूत्र में बांधने वाले स्थानों में अन्यतम है। लगभग सभी पुराणों में तीर्थ महात्म्य वर्णित है।

३. राजधर्म

पुराणों में राज धर्म का विवरण अनेक स्थलों पर बहुशः उपलब्ध है। मत्स्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अग्नि पुराण, गरुड पुराण आदि पुराणों में राजधर्म पर प्रकाश डाला गया है। पुराणों में राज्य के सात अंग निर्दिष्ट किये गये हैं :-

(१) स्वामी या राजा

(२) अमात्य या मंत्री

(३) जनपद

(४) दुर्ग

(५) दण्ड

(६) कोश

(७) मित्र (सहायक राजा)।

मत्स्य पुराण में साम, दाम, दण्ड, भेद की नीति भी वर्णित है। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में राजनीति से सम्बन्धित पुष्कर नीति का वर्णन है। जबकि अग्नि पुराण में रामोक्त नीति तथा कामन्दकीय नीति का वर्णन मिलता है। इनके अतिरिक्त राजनीति विषयक वर्णन मार्कण्डेय पुराण में भी प्राप्त होता है। राजधर्म से सम्बन्धित अध्यायों के परिशीलन से पौराणिक राजधर्म का स्वरूप भली-भांति अभिव्यक्त होता है जो महाभारत आदि ग्रन्थों में प्रतिपा‌द्य राजनीति से भिन्न नहीं है।

४. भूगोल

पुराण में भूगोल के विषय में भी विस्तार से वर्ण उपलब्ध होता है। पुराणकारों ने भूगोल का विवरण दो द ष्टियों से किया है। एक तो है समस्त संसार का भूगोल और दूसरा है भारतवर्ष का भूगोल। भुवनकोश के विषय में प्राचीन मत यही था कि प थ्वी चार द्वीपों से घिरी है। परन्तु पुराणों के नवीन संस्करण में सात द्वीपों का सिद्धान्त मान लिया गया था। इन सात द्वीपों के क्रम के विषय में पुराणों

में एक मत द ष्टिगोचर नहीं होता है परन्तु 'सप्तद्वीपा वसुमती' का सिद्धान्त समग्र पुराणों का एक नितान्त, महनीय तथा मान्य रहस्य है। जम्बूद्वीप इस कल्पना के द्वारा मध्य में है और यह सात द्वीपों के द्वारा आवेष्टित है और यह द्वीप आपस में एक-एक समुद्र के द्वारा प थक् किये गये हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं :-

(१) जम्बूद्वीप

(२) प्लक्ष द्वीप

(३) शाल्मलि द्वीप

(४) कुश द्वीप

(५) क्रो च द्वीप

(६) शाक द्वीप

(७) पुष्कर द्वीप

विभिन्न पुराणों में से ब्रह्म पुराण में सर्वाधिक भौगोलिक वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त अग्नि, मत्स्य, विष्णु, गरुड व मार्कण्डय पुराण में भी विश्व तथा भारत के भूगोल का वर्णन उपलब्ध होता है। पुराणों में इन द्वीपों के अन्तर्गत आने वाले पर्वतो, नदियों, देशों या वर्षों तथा वहां के निवासियों का वर्णन भी उपलब्ध होता है।

पुराणों की संख्या

पुराण और उपपुराण के नाम से दो प्रकार के पौराणिक ग्रन्थ हैं। 'देवीभागवत' में पुराणों के आद्य अक्षर के अनुसार १८ प्रकार कहे गये हैं। मकारादि से दो-मत्स्य तथा मार्कण्डेय पुराण भकारादि से दो-भागवत तथा भविष्य। ब्र अक्षर से तीन-ब्रह्म, ब्रह्मवैवर्त्त तथा ब्रह्माण्ड पुराण। व अक्षर से चार-वामन, विष्णु, वायु तथा वाराह पुराण। अ, ना, पद्म, लिं, ग, क, स्क के अनुसार-अग्नि, नारद, पद्म, लिंग, गरुड, कूर्म तथा स्कन्द पुराण।

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।

अनापद् लिङ्ग-कू-स्कानि पुराणानि प थक् प थक्।।

विष्णु तथा भागवत में एक विशेष क्रम से ये ही नाम प्राप्त होते हैं-

ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड तथा ब्रह्माण्ड

ब्रह्म	-	१० हजार श्लोक	भागवत	-	१८ हजार श्लोक
पद्म	-	५५ हजार श्लोक	नारद	-	२५ हजार श्लोक
विष्णु	-	२३ हजार श्लोक	वाराह	-	२४ हजार श्लोक
मार्कण्डेय	-	९ हजार श्लोक	स्कन्द	-	८१ हजार श्लोक
अग्नि	-	१५ हजार ४ सौ श्लोक	वामन	-	१० हजार श्लोक
भविष्य	-	१४ हजार ५ सौ श्लोक	कूर्म	-	१७ हजार श्लोक
ब्रह्मवैवर्त्त	-	१८ हजार श्लोक	मत्स्य	-	१४ हजार श्लोक
लिङ्ग	-	११ हजार श्लोक	गरुड	-	१६ हजार श्लोक
वायु	-	११ हजार श्लोक	ब्रह्माण्ड	-	१२ हजार श्लोक